दुनिया का मित्र बनना – परमेश्वर का शत्रु बनना है

याकूब 4:4 (हिंदी ओ.वी.):
“हे व्यभिचारिणों, क्या तुम नहीं जानते, कि संसार से
मित्रता रखना परमेश्वर से बैर रखना है? इसलिये जो कोई संसार
का मित्र होना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है।”

यह वचन विश्वासियों के जीवन में एक गंभीर समस्या की ओर संकेत करता है सांसारिकता। दुनिया और उसकी इच्छाओं से प्रेम रखना हमें अपने आप परमेश्वर के विरुद्ध खड़ा कर देता है। यहाँ “दुनिया” का अर्थ केवल पृथ्वी नहीं है, बल्कि वह मूल्य-व्यवस्था, इच्छाएं और आनंद हैं जो परमेश्वर की इच्छा के विरोध में हैं।

दूसरे शब्दों में, जब हम व्यभिचार, अशुद्धता, लोभ, भौतिकवाद, और सांसारिक आनंद (जैसे संगीत, खेलों की अंधभक्ति, शराब पीना, या पापपूर्ण आदतों के सामने झुकना) के पीछे भागते हैं, तो हम स्वयं को परमेश्वर का शत्रु बना लेते हैं। हम एक साथ परमेश्वर और संसार दोनों की सेवा नहीं कर सकते (मत्ती 6:24)।

1 यूहन्ना 2:15–17 (ERV-HI):

दुनिया का मित्र बनना – परमेश्वर का शत्रु बनना है

“दुनिया से या उन चीज़ों से जो दुनिया में हैं, प्रेम न करो। अगर कोई दुनिया से प्रेम करता है, तो उसमें पिता का प्रेम
नहीं है। क्योंकि जो कुछ भी दुनिया में है—शरीर की इच्छा, आँखों की इच्छा और जीवन का घमंड—यह सब पिता की ओर से नहीं
है, बल्कि दुनिया की ओर से है। और दुनिया और उसकी इच्छाएँ
मिटती जा रही हैं, परन्तु जो परमेश्वर की इच्छा को पूरा करता
है, वह सदा बना रहता है।”

यहाँ यूहन्ना तीन मुख्य सांसारिक प्रलोभनों का उल्लेख करता है:

1. शरीर की इच्छा — शारीरिक सुख की लालसा,
2. आँखों की इच्छा — जो दिखता है, उसे पाने की लालसा,
3. जीवन का घमंड — उपलब्धियों और सफलता से उपजा घमंड।

ये सब बातें परमेश्वर की ओर से नहीं आतीं। यूहन्ना चेतावनी देता है कि यह संसार और इसकी इच्छाएँ अस्थायी हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा को पूरा करता है, वह सदा बना रहता है।

जीवन का घमंड – एक खतरनाक जाल

जीवन का घमंड उस आत्म-भ्रम को दर्शाता है जिसमें मनुष्य अपने ज्ञान, धन या प्रसिद्धि के कारण अपने आप को परमेश्वर से ऊपर समझने लगता है। बाइबल में घमंड को एक खतरनाक चीज़ बताया गया है।

दुनिया का मित्र बनना – परमेश्वर का शत्रु बनना है

नीतिवचन 16:18 (हिंदी ओ.वी.):
“अभिमान के पीछे विनाश आता है, और घमंड के बाद पतन होता है।”

हम इसे कई लोगों के जीवन में देख सकते हैं, जिन्होंने घमंड और आत्म-निर्भरता के कारण परमेश्वर को छोड़ दिया।

उदाहरण के रूप में, दानिय्येल 5 में राजा बेलशज्जर का उल्लेख है। उसने यरूशलेम के मन्दिर से लाए गए पवित्र पात्रों का उपयोग दावत में किया और परमेश्वर का अपमान किया। उसी रात एक रहस्यमयी हाथ प्रकट हुआ और दीवार पर “मENE, MENE, TEKEL, UFARSIN” लिखा, जो उसके राज्य के अंत और न्याय की घोषणा थी।

दानिय्येल 5:30 (हिंदी ओ.वी.):
“उसी रात बेलशज्जर, कस्दियों का राजा मारा गया।”

इसी तरह, लूका 16:19–31 में वर्णित एक धनी व्यक्ति अपने विलासी जीवन में मस्त था और लाजर की गरीबी की उपेक्षा करता था। मरने के बाद वह पीड़ा में पड़ा था, जबकि लाजर अब्राहम की गोद में था। यह दृष्टांत हमें दिखाता है कि जो लोग केवल सांसारिक सुखों में

दुनिया का मित्र बनना – परमेश्वर का शत्रु बनना है

मग्न रहते हैं और परमेश्वर की उपेक्षा करते हैं, उनका अंत दुखद होता है।

दुनिया मिट जाएगी

बाइबल स्पष्ट कहती है कि यह दुनिया और इसकी सभी इच्छाएँ समाप्त हो जाएंगी।

1 यूहन्ना 2:17 (ERV-HI):
“दुनिया और इसकी इच्छाएँ समाप्त हो रही हैं, लेकिन जो
परमेश्वर की इच्छा को पूरा करता है, वह सदा बना रहेगा।”

यह वचन संसारिक लक्ष्यों की क्षणिकता को दर्शाता है। इस संसार की हर वस्तु — हमारी संपत्ति, सफलता, और सुख एक दिन समाप्त हो जाएंगी। लेकिन जो लोग परमेश्वर की इच्छा को पूरी करते हैं, वे अनंत तक बने रहेंगे।

मरकुस 8:36 (हिंदी ओ.वी.):
“यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपना प्राण खो दे तो उसे क्या लाभ होगा?”

दुनिया का मित्र बनना – परमेश्वर का शत्रु बनना है

यह प्रश्न हमें याद दिलाता है कि अनंत जीवन ही हमारा वास्तविक लक्ष्य होना चाहिए, न कि यह सांसारिक सुख। धन, प्रसिद्धि, या दुनिया की खुशियाँ आत्मा के मूल्य की बराबरी नहीं कर सकतीं।

आप किसके लिए जी रहे हैं?

बाइबल हमें बार-बार अपनी प्राथमिकताओं की जांच करने के लिए कहती है। क्या आप परमेश्वर के मित्र हैं या आपने संसार से मित्रता कर ली है? यदि आप अब भी पाप, धन की लालसा, प्रसिद्धि या सांसारिक सुखों में फंसे हुए हैं, तो आप वास्तव में परमेश्वर के विरोध में खड़े हैं।

परंतु शुभ समाचार यह है: परमेश्वर करुणामय है। यदि आपने अब तक यीशु को नहीं अपनाया है, तो आज परिवर्तन का दिन है। पाप से मुड़ें, और यीशु के नाम में बपतिस्मा लें जैसा कि प्रेरितों के काम 2:38 में कहा गया है।

प्रेरितों के काम 2:38 (हिंदी ओ.वी.):
“तौबा करो और तुम में से हर एक व्यक्ति यीशु मसीह के नाम पर बपतिस्मा ले, ताकि तुम्हारे पापों की क्षमा हो, और तुम
पवित्र आत्मा का वरदान पाओ।”

दुनिया का मित्र बनना – परमेश्वर का शत्रु बनना है

यही है परमेश्वर का सच्चा मित्र बनने का मार्ग।

निष्कर्ष: अनंत जीवन से जुड़ा निर्णय

बाइबल हमें सावधान करती है कि हम अपने निर्णयों को गंभीरता से लें। दुनिया क्षणिक सुख तो देती है, लेकिन अनंत जीवन कभी नहीं।

1 कुरिन्थियों 10:11 (हिंदी ओ.वी.):
“ये बातें हमारे लिए उदाहरण बनीं, ताकि हम बुराई की लालसा न करें, जैसे उन्होंने की।”

पिछले अनुभव हमें चेतावनी देते हैं।

प्रश्न: क्या आप परमेश्वर के मित्र हैं या शत्रु? यदि आप अभी भी इस संसार से चिपके हुए हैं चाहे वह भौतिकवाद, पाप, या कोई भी सांसारिक आकर्षण हो तो आप परमेश्वर के विरोध में खड़े हैं। लेकिन यदि आप आज यीशु को अपनाते हैं, तो आप उसके साथ मेल कर सकते हैं और उसका सच्चा मित्र बन सकते हैं।

दुनिया का मित्र बनना – परमेश्वर का शत्रु बनना है

मरनाथा!
(प्रभु, आ जा!)

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp